कपास की फसल में नाशीजीव चेतावनी एवं प्रबंधन सलाह

****

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्-राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन अनुसन्धान केंद्र, नई दिल्ली की कपास टीम द्वारा 2-4 जुलाई 2018 के दौरान पंजाब (फाजिल्का, मुक्तसर, भठिंडा एवं मांसा), हरियाणा (हिसार, फतेहाबाद एवं सिरसा) एवं राजस्थान (हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर) में कपास के खेतों का सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण में पाया गया कि 30- 45 दिन की फसल में सफ़ेद मक्खी की संख्या बहुत कम है किन्तु 55-60 दिन की फसल में सफ़ेद मक्खी की सँख्या आर्थिक क्षति स्तर (ई.टी.एल.) के निकट है एवं कुछ खेतों में विशेषकर फाजिल्का एवं मुक्तसर में ई.टी.एल. को पार कर रही है। भठिंडा जिले में हरा तेला की संख्या भी आर्थिक क्षति स्तर के ऊपर है।

उपरोक्त परिस्थित को ध्यान में रखते हुए किसानों को सलाह दी जाती है कि :

- ✓ **खेतों की लगातार निगरानी जारी रखें।**
- ✓ **कपास के खेतों में जहाँ नीचे की पत्तियों पर सफ़ेद मक्खी के बच्चे (निम्फ) अधिक हों वहां पर स्पिरोमेसिफेंन २२.9 एस सी 200 मिली/ एकड़ की दर से 200 लीटर पानी के साथ छिडकाव करें।**
- ✓ **जिन कपास के खेतों में सफ़ेद मक्खी (8-10/पत्ती) एवं हरा तेला (2/पत्ती) की संख्या आर्थिक क्षति स्तर पर पहुँच गयी है वहां पर किसान फ्लोनिकामिड 50 डब्ल्यू पी 80 ग्राम प्रति एकड़ 200 लीटर पानी के साथ छिडकाव करें।**
- ✓ **जहाँ पर सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक क्षति स्तर से थोडा कम कम है वहां पर नीम अज़ाडिरेकटिन (1500 पी पी एम या 300 पी पी एम) एक लीटर प्रति एकड़ की दर से छिडकाव करें।**

हरा तेला (Jassids)

सफ़ेद मक्खी के बच्चे (निम्फ) (Whitefly nymphs)

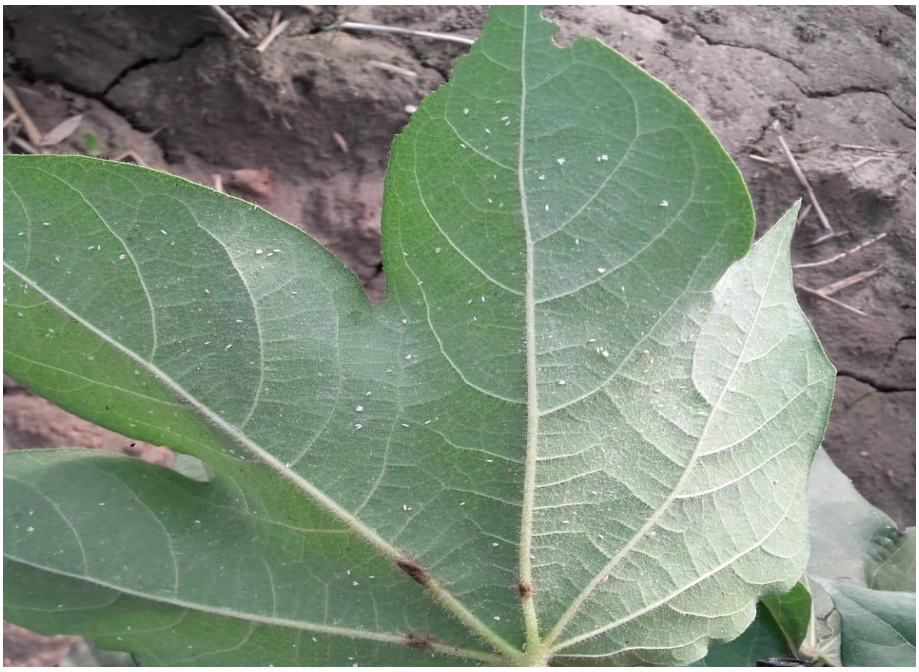

सफ़ेद मक्खी वयस्क (Whitefly adults)